

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री पार्थसारथिदासेन कृता  
॥ श्री श्रीनिरासस्तुतिः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्री श्रीनिरासस्तुतिः ॥

भक्तानीष्टप्रदातारं जगन्मङ्गलरिग्रहम्।  
श्रीकल्याणपुराधीशं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 1 ॥

उर्ध्वपुङ्गुशिरोरत्नं रत्नहाररिदुषितम्।  
लोकैकदम्बकदीर्घं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 2 ॥

अञ्जानतिमिरापोहं तेजोमयसुरिग्रहम्।  
कलिकल्मषपापघ्नं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 3 ॥

मोक्षसांराज्यदातारं कारेरीतटकल्लकम्।  
श्रीभूमिसहितं रन्दे श्रीनिरासमहं भजे ॥ 4 ॥

श्रीमङ्गलपुराधीशं श्रीरत्नसाङ्गितरक्षसम्।  
भक्तार्तिभङ्गनोद्युक्तं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 5 ॥

शङ्खाचक्रगदाहस्तं रत्नकुण्डलमण्डितम्।  
रज्जोर्ध्वं पुङ्गुज्वलितं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 6 ॥

द्विनदीमध्यगं देवं कल्याणपुरनाथकम्।  
देवर्षिगणसम्पूज्यं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 7 ॥

सालग्राममयीं भव्यां मालां रत्नरिदुषिताम्।  
धारयन्तं दयापूर्णं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 8 ॥

श्लोणर्क्षमकरे मास उद्वाहोत्सरशोभिनम्।  
अलर्मेल्नायिकान्निष्टं श्रीनिरासमहं भजे ॥ 9 ॥

আজানুবাহুসুভগং কমলাযতলোচনম্।  
রত্নহাটককেযুর ভূষণৈর্ভূষিতং ভজে ॥ 10 ॥

দ্বিনদীসেরিতং শ্রীশং ব্রহ্মরুদ্রাদিসেরিতম্।  
জিতকন্দর্পসৌন্দর্যং শ্রীনিরাসমহং ভজে ॥ 11 ॥

কল্যাণোৎসরকালেষু রেদঘোষণে হর্ষিতম্।  
সঙ্গীতরসিকং শ্রীশং শ্রীনিরাসমহং ভজে ॥ 12 ॥

অভীক্ষিতপ্রদানেন প্রার্থনাপূরণোৎসুকম্।  
কেশরং হেমপট্টাভং শ্রীনিরাসমহং ভজে ॥ 13 ॥

রুদ্রমুক্তিপ্রদং ভক্তপ্রার্থনাপূরণোৎসুকম্।  
দ্বিজারোহণসন্তুষ্টং শ্রীনিরাসমহং ভজে ॥ 14 ॥

কালক্ষেপকথারাগ্ভিঃ পরিতুষ্টঃ শ্রিয়ঃ পতিঃ।  
শ্রীনিরাসো দীনবন্ধুঃ ভূয়ান্নঃ শ্রেয়সে সদা ॥ 15 ॥

শিরারনসমর্থায শ্রীভূসংশ্লেষতোষিণে।  
সর্দাহভযহস্তায় নিত্যশ্রীর্নিত্যমঙ্গলম্ ॥ 16 ॥

কলিপ্রত্যক্ষদেবায় শ্রিতকল্প মহীরুহে।  
কলিনাশন দক্ষায় শ্রীনিরাসায় মঙ্গলম্ ॥ 17 ॥

গোরিন্দগানতুষ্টায় গীর্বাণেশার্চিতাভ্যুযে।  
গিরিসপ্তকনাথায় শ্রীনিরাসায় তে নমঃ ॥ 18 ॥

ভক্তরক্ষণশীলায় জগন্মোহনমূর্তয়ে।  
শ্রীকল্যাণপূরেশায় শ্রীনিরাসায় মঙ্গলম্ ॥ 19 ॥

पार्थसारथिदासेन कृतेयं भक्तिपूर्विका।  
सरैश्वर्यप्रदात्री च श्रीनिरासस्तुतिर्भवेत् ॥ 20 ॥

॥ श्री श्रीनिरासस्तुतिः समाप्ता ॥